सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• मधु टाक

सृजक-सृजन-समीक्षा

मधु टाक

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत
"सृजक"
मधु टाक का परिचय

नाम - मधु टाक

जन्म तिथि- 10 अगस्त

शिक्षा - बी एस सी M. A- Economics
M. A -Sociology

स्थायी पता- 6, A स्नेह-नगर

[इन्दौर म.प्र]

कार्य क्षेत्र -व्यवसाय प्लाईवुड एंड.

लेमिनेट्स

सामाजिक क्षेत्र - रोटरी अन्तराष्ट्रीय संस्था में सक्रियता

रोटरी क्लब - पूर्व अध्यक्ष

रोटरी डिस्ट्रिक्ट -पूर्व सहायक मंडलाध्यक्ष

लेखन विधा- मुक्तक, गज़ल,गीत

ई मेल madhu10.rotary@gmail.com

वाट्स एप न. 98933 87245

अन्य उपलब्धियां

सर्वश्रेष्ठ -अध्यक्ष

सर्वश्रेष्ठ- सहायक मंडलाध्यक्ष

प्रकाशन- सर्वश्रेष्ठ स्मारिका {मुस्कान}

विभिन्न पत्रिकाओं एंव क्लबों की पत्रिकाओं में प्रकाशित में लेख

नारी सशक्तिकरण पर

दैनिक अखबार में गजल प्रकाशित

आकाशवाणी में गज़ल गायन

सामाजिक संस्थाओं में सम्मान

कई मंचों पर गीत ग़ज़ल मुक्त
प्रस्तुत किये
रुचि-सेवा संगीत साधना

आत्मकथ्य

कल्पना और विचारों का ताल मेल एंव भावों को शब्दों में प्रवाहित करना ही कविता है मंच संचालन सदा ही मेरी रुचि में शामिल रहा, संचालन के दौरान स्वरचित भावों को शब्दों में पिरोकर व्यक्त करना मन को भाता रहा फिर आदत सा बन गया, अपनो का स्नेह एंव प्रोत्साहन पाकर सदा निरंतरता बनी रही||

कभी कभी विरासत में ऐसी विधा मिल जाती है जिससे जीवन परिष्कृत हो जाता है

मैं अपनी आदरणीय माँ की बात कर रही हूँ जिन्होंने निर्गुण भक्ति को मान्यता देकर पन्द्रह किताबों का अर्थात पन्द्रह सौ स्वरचित भजनों को प्रकाशित किया है

आपकी लगन एंव समर्पण ही मुझे इस विधा तक खींच लाई है

मामा फिल्म जगत के सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता एंव गीतकार हैं, आपकी उपलब्धियां सदा मानस पर अंकित होती रहीं|

आपका ही कुछ अंश मुझ तक छन कर आ गया, मैं तो बस विद्यार्थी हूँ
शब्द जीवन का अभिन्न अंग है
जिसमें मैं रच बस जाती हूँ
अपने को भी खो देती हूँ
लिखना मेरा श्रृंगार है
मन का आनंद है
इसीलिये अपने जज़्बातों की स्याही से कलम भिगोती रही||¦||

"सृजक का सृजन"

झूठा रिश्ता

इन्तजार में तेरे आशियां बनाती रही
दरवाजे पर यूँ बंदनवार लगाती रही
लौट ही आयेगा दिल की जमी पर
खुद को झूठी दिलासा दिलाती रही

सूरत यार की दिल में सजा रखी है
अपनी चाहत शिद्दत से निभाती रही
इस बात का यकीन है तू नहीं मेरा
तेरे ही नाम की मेंहदी रचाती रही

गुम हुई हूँ मैं इस तरह विरानियों में
दुनिया से खुद को ही छिपाती रही
जब भी देखा उसे गैरों के पहलू में
आहत हुए मन को बहलाती रही

तुझे इल्म ही नहीं मेरी मुहब्बत का
तेरे अश्क़ मेरी आँखों से बहाती रही
खुद में ही ख़ुदा को पा लिया "मधु"
पत्थरों से ये झूठा रिश्ता मिटाती रही|

बेसबब

ऐसे ही नहीं भाता दिल को कोई बेसबब
इश्क़ की लहर कभी उठती नहीं बेसबब

कोई तो होगा जुनून देश की हिफाज़त का
सिपाही ऐसे ही नहीं हो जाता शहीद बेसबब

मुकद्दर में लिखे का अजब असर देखा
दरिया में शज़र को बहते देखा बेसबब

तुमने है महफिल सजाई गैरों में जाकर
हम ज़ख़्म जिगर में खाये बैठे बेसबब

इश्क़ की इबारत में कुछ ऐसा फन होगा
चकोर चाँद को टकटकी लगाता बेसबब

कुछ कहा चाँद ने मुस्कुराहट के दरिया को
यूँ ही नहीं मचलती ये लहरें"मधु" बेसबब

शब्द

शब्द चंचल
मन की है वेदना
कही न जाये

कोरा कागज
सूख गई स्याही
आँसू छलके

मनवा डोले
लिख लिख के पाती
पिया नादान

सुन्दर नारी
सजने को आतुर
यादों में खोई

बंजारे शब्द
उलझा है जीवन
बना फसाना

सुप्रभात

उजालों से नहीं स्याह रात से डर लगता है
मिट्टी का बसेरा बरसात से डर लगता है
लबों को अपने सिले न जाने कब से बैठी हूँ
खंजर से चुभते सवालात से डर लगता है

मुझको तन्हाईयों की सजा सुना गया कोई
मुहब्बत के चंद खयालात से डर लगता है
आँसू दर्द तड़प के तोहफ़े से भर गया दामन
ज़िन्दगी अब तेरी हर सौगात से डर लगता है

रुसवा न हो जाएं कभी इस जमाने में सनम
उनकी हर एक मुलाकात से डर लगता है
दोस्ती का उन्वान ही बेहतर है ज़िन्दगी में
मुहब्बत के रंगीन जज़्बात से डर लगता है

हम है बंजारे से फिरते हैं जग में मारे मारे
घर बसाने की हर शुरुआत से डर लगता है
दिल के यूँ जलने भर के तसव्वुर से "मधु"
उगते सूरज के सुप्रभात से डर लगता है

नन्हा पाखी

खुद को खुद से सम्हलना सीख लूँ
हर एक सहारे को पकड़ना सीख लूँ
हूँ नई पाखी......
थोड़ा उड़ना सीख लूँ
गिर न जाने कहीं जमी पर देखो
नन्हे कदमों के टिकना सीख लूँ
हूँ नई पाखी ....
चहकी चंचला खिलखिलाती वसुधा
संग संग इनके मैं चहकना सीख लूँ
हूँ नई पाखी......
तोड़कर सभी सरहद की बेड़ियों को
सबमें रस माधुर्य भरना सीख लू
हूँ नई पाखी------
भटकते रहा दाना पानी की खातिर
रात शाख पर बसेरा करना सीख लूँ
हूँ नई पाखी........
दुनिया की नजरों से छिपकर बैठी
फैलाये हर जाल से बचना सीख लूँ
हूँ नई पाखी.......
जिसने दी चोंच चुग्गा भी वो ही देगा
बस रब पर ऐतबार करना सीख लूँ
हूँ नई पाखी.........
बन कर पाखी करूण मधुर क्रंदन
तरू की बाहों में "मधु" रहना सीख लूँ
हूँ नई पाखी.........

ग़ज़ल

लिखी एक गजल हमने तेरा नाम से दिलबर
रुसवा न हो यार छिपाकर जमाने से रखी है

महकते हैं किताबों में अभी तक वो फूल पुराने
रीत ये प्रीत की यूँ रिश्तों को निभाने से रखी है

वो वादा करके छोड़ गये यूँ सरे राह मुझको
आँखें आज भी अश्क़ों भरे पैमाने से रखी है

हिज्र की रात थी बाद उसके कभी सो न सकी
उसकी हर बात को दिल में करीने से रखी है

ऐ परिन्दे रख फासला तू सूरज से जल जाएगा
तेरी पहचान खुदा ने मखमली पंखों से रखी है

गुल-ऐ गुलजार हो कभी अपनी भी जिन्दगी
यही एक आरज़ू जो "मधु" जमाने से रखी है

ग़ज़ल

बुझते दिल का जनाजा तेरी राहों में छोड़ आये है
मुकद्दर को फिर यूँ अपने तेरी राहों से जोड़ आये है

चाह कर भी लिख न सकी दास्तान-ऐ इश्क़
कराहते हुए लफ्ज़ो को तेरी राहों में छोड़ आये हैं

खुदा सलामत रखना उसे दुनिया के हर गम से
दिल को हम अपना फिर तेरी राहों में तोड़ आये हैं

जुस्तजू जिसकी है उसके तो ख्वाबों में पा लेंगे "मधु"
ख्वाहिशों से भरा मटका तेरी राहों में तोड़ आये हैं

"सृजन की समीक्षा"

1.

मधू जी आपकी लेखनी को नमन,बहुत सुंदर भाव के साथ रची रचनाओं ने मन मोह लिया **अनंत बधाई** आपको ,माँ शारदे सदा आशीष आपके सिर पर रखे यही दुआ है मेरी।

कैलाश सोनी सार्थक

2.

वाह वाहह्हह्हह्हह्हह्हह्हह्हह्हह्

एक से एक बढ़कर उत्कृष्ट सृजन...आद. मधुजी....

आज आपके व्यक्तित्व और कृतित्व को एक साथ जानकर मन अभिभूत हो गया....

आपकी प्रेरणास्त्रोत आद.मांजी को नमन ...सुखद है जानना की 15 सौ भजनों की सर्जिका हैं आप ...

अंत में ...

प्रीति जी , मनोज जी और ब्रजेश जी को साधुवाद

गरिमामयी शख़्सियत से मिलवाने हेतु...

सादर .. सस्नेह.

सुमन झुड़ेले

3.

आदरणीया मधु जी, सादर नमस्कार

केंद्रीय रचनाकार विशेषांक में सप्ताह के कवि के रूप में प्रस्तुत होने पर आपको बहुत बहुत **बधाई और शुभकामनाएं**

आपका परिचय, सामाजिक क्षेत्र में दखल, उपलब्धियां व सम्मान , बेहद प्रभावशाली हैं।

मुझे जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप मंच संचालन में निपुण हैं ,

यह हर किसी के बस की बात नहीं है, और आप अपनी मां और मामाजी से प्रभावित हैं और उनके गुण आपको विरासत में मिले हैं।

पहली रचना की पहली दो लाइनें मुझे अत्यधिक भा गई। बहुत सुंदर सृजन है।

बेसबब गजब के भाव लिए सुंदर रचना है।

हाइकु शब्द - शानदार

डर लगता है शानदार ग़ज़ल

नन्हा पाखी बेहद खूबसूरत सृजन

बहुत सुंदर ग़ज़ल

एक और खूबसूरत गज़ल।

आप अपनी अभिव्यक्ति ग़ज़लों के माध्यम से बहुत सुंदर तरीके से करती हैं। आपके उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक मंगलकामनाएं,...

पिंकी परुथी "अनामिका"

4.

मधु टाक जी को विरासत में मिली काव्यानुभूति विलक्षण है।माँ ने भक्ति भाव से भरे भजन लिखे पन्द्रह सौ भजन लिखे और पन्द्रह किताबें प्रकाशित कीं। यह स्वयं में गौरव है।मामा स्वयं फिल्मकार और गीतकार हैं । मधु जी में सेवा भाव है वे रोटरी क्लब की सदस्या भी हैं ।

वे कहती हैं- -लेखनी उनका श्रृंगार है। अर्थात रमणी जैसे अपने को अलंकृत करती है। वे भावों को सृजन के माध्यम से सजाती संवारती है। अद्भुत मधुजी मंच का संचालन भी करती हैं ।दर्शक दीर्घा को बाँधे रखना भी एक कला है।

1---प्रथम रचना मे मधु जी प्रिय की आस में बन्दनवार सजाती है। पर प्रिय को किसी अन्य के आगोश मे देख कर दुखी हो जाती है।

इस दर्द पर अपने आत्म विश्वास के सहारे निजात पाती है।

2---बेसबब

कवयित्री कहती हैं जब कारण होता है कार्य तभी सम्पादित होता है।देश

प्रेम का जज्बा ही किसी देश प्रेमी को वतन पर कुर्बान होने के लिए प्रेरित करता है।

प्रेम में कुछ तो आकर्षण होता हैं कि चकोर चाँद को निर्निमेष ताकता है। समुद्र की लहरों मे उछाल चाँदनी के स्पर्श का परिणाम है।

3---हायकु---शब्द

शब्द वहम हैं--पर फिर भी मन को बाँध नहीं पाते ।मन भटक जाता है। देखा स्याही सूख गई--रीत गया मन तो छलक पडी वेदना।

मधुजी कम शब्दों मे इतनी सुंदर

भावों की व्यंजना।

प्रतिक्षा में नारी सज धज रही । रिझाने को आतुर है।प्रिय या तो काजल की प्रशंसा करेंगें या बिंदी की। क्या पसंद आयेगा उन्हें?

कम शब्द और पूरी सजधज।

3--तीसरी रचना बंजारे शब्द---शब्दों को पकड़ने का प्रयास करती रचना पर हाथ नहीं आते।

4--चौथी रचना कवयित्री कहती हैं दिन तो कट जाता है। पर रात का सन्नाटा और अंधेरा कितना भयानक।

अकेले समय काटना मुश्किल और प्रिय के रूठने का भय। बात बात मे कभी बुरा लग जाए और प्रिय रूठ जाए तो।इसलिये दोस्ती ही ठीक है महोब्बत कब पूरी होती है।

दिल जल कर जो प्रकाश दे रहा है वही बहुत है। दिन के उजाले मे सबका सामना मुश्किल है।

5--पाखी---अपने को पाखी के रुप में देख वे कहती हैं--पहले उड़ना और सम्हलना सीख लो। नीचे जाल मे फँस सकते हो।

यथार्थ के निकट है रचना।

6---प्रेम किसी को पता ना चले बदनाम न हो जाए। यही तो होता है प्रेम दर्द का दूसरा नाम है।

अद्भुत। वे कहती हैं मत ऊँचा उड पँख जल जायेगें।

मैं गुनगुना सीख लूं ।सबको खुश रखुं।
भरोसा है परमेश्वर पर जिसने जीवन दिया खाना भी वही देंगें।
दृढ़ विश्वास । अप्रतिम। कवयित्री उस वृक्ष पर भी विश्वास करती है जिस पर बसेरा है।

7--- मधु जी का मानना है जीवन मे बहुत कुछ छूटता जाता है। प्रिय का साथ भी। इतने पर भी प्रिय की मंगल कामना उन्हें कोई कष्ट ना हो। नारीत्व पूर्ण होता है। ऊँचाइयों को छूता है। और कवित्व विराम पाता है। मधु जी के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ। **बधाई एवं शुभकामनाएं।**

धन्यवाद।

डा राजलक्ष्मी शिवहरे।

5.

आ मधु जी शानदार जीवन परिचय,
सामाजिक सरोकारों में संलग्न व्यक्तित्व,
माँ की झलक एक बेटी में स्वभावगत आती है ।।
मामाजी का नाम भी बता देतीं तो अच्छा होता ।

पहली ग़ज़ल :-

इंतज़ार ,प्रेम ,समर्पण और अश्कों की मिली जुली दास्ताँ है ।
झूठी दिलासा लिंगभेद है ।

दूसरी रचना ग़ज़ल के मापदण्डों का पालन अलबत्ता नही करती ,
नई विधाओं के आलोक में ऐसी रचना सजल कहलाती है ।

सुन्दर हायकू

मनवा डोले

चौथी ग़ज़ल शानदार निर्वहन

खूबसूरत भाव

मिटटी का बसेरा

दोस्ती का उन्वान
जिंदगी की सौगात बेहतरीन अश्आर हुए
नन्हा पाखी खूबसूरती से बुनी रचना है ।
क़दम क़दम पर पुख्ता होते एतबार
गिर न जाऊँ कहीं ज़मीं .....होगा शायद
गीत कुछ कसावट माँगता है ।।
छटी ग़ज़ल शानदार भावों से युक्त है ।
गज़ल में मतले की अनिवार्यता होती है ।
अंतिम ग़ज़ल भी बढ़िया है
ओवर आल एक खूबसूरत सृजन का शानदार परिवेश
कहीं-कहीं वैयाकरणिक त्रुटियाँ हैं ।
अनुस्वार, मात्राएँ और लिंगभेद पर ध्यान देने की जरूरत है ।
गज़ल में बह्र और वैयाकरणिक नियमों की थोड़ी जानकारी,
सृजन में प्राण फूंकेगी ।
और एक अंतिम बात हर ग़ज़ल में ,अपने नाम की उपस्थिति के व्यामोह से बचें ।।
शुभकामनायें,... जय हो , विजय हो ।

ब्रजेश शर्मा विफल,... झाँसी ।

6.

भाव, कथ्य, शब्द, शिल्प, से सुसज्जित सहित्यरथ की सतत यात्रा तथा मधु जी के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ। **बधाई एवं शुभकामनाएं।**

प्रीति सुराना, वारासिवनी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com